एक प्रयोग द्वारा इसे साबित भी किया ।

12.4 श्रम लागत का प्रभाव (Effect of Labour Cost)

अल्फ्रेड वेबर के अनुसार जब किसी स्थान पर उद्योग के स्थानीयकरण में परिवहन लागत (Transport Cost) की तुलना में श्रम लागत (Labour Cost) कम होती है तो उद्योगों की अवस्थापना लागत ही उद्योगों की स्थिति का निर्धारण करती है । कुछ ऐसे केन्द्र हो सकते हैं जहाँ से श्रम दूसरे स्थान पर आसानी से नहीं भेजा जा सकता है। अत: वहाँ श्रम के महत्व के कारण उद्योग का स्थानीयकरण होगा । श्रम का स्थानीयकरण दो तत्वों से प्रभावित होता है जो निम्न प्रकार है–

(i) **श्रम लागत सूचकांक (Labour Cost Index) :** यह श्रम लागत तथा निर्मित माल के भार का अनुपात है ।

(ii) **स्थानीयकरण भार (Location Weight) :** यह उत्पादन प्रक्रिया में परिवहन पर किया जाने वाला कुल भार है ।

श्रम लागत के स्थानीयकरण भार से अनुपात को श्रम गुणक (Labour Coefficient) कहते है । श्रम गुणक के अनुपात के परिणाम स्वरूप उद्योग परिवहन स्थानीयकरण से श्रम स्थानीयकरण की ओर विचलित होते है ।

उदाहरण स्वरुप यदि किसी औद्योगिक इकाई में वस्तु के उत्पादन का मूल्य 1000 रू है और उसमें श्रम पर 300 रु० व्यय होते है तो इस दशा में उद्योग की स्थापना श्रम अधिक है । ठीक इसके विपरीत यदि किसी औद्योगिक इकाई में वस्तु 200 रु० है तो परिवहन लागत के अनुसार उद्योग की अवस्थिति निर्धारित होगी ।

वेबर यह मानते है कि श्रम कुछ निश्चित स्थानों पर मिलता है तथा श्रम का खर्च स्थान-स्थान पर अलग-अलग होता है । अत: श्रम का खर्च कम करने के लिए कारखानें की स्थापना उस विन्दु से हटकर भी हो सकती है जो परिवहन खर्च में जितनी वृद्धि होती है उससे अधिक या उतना श्रम के खर्च में वचत हो ।

श्रम एवं परिवहन लागत का विश्लेषण करते हुए वेबर ने आइसोडापेन बनायें । आइसोडापेन वह रेखा है जो समान कुल व्यय के बिन्दु पथ को मिलाती है । अर्थात परिवहन खर्च की दृष्टि से सर्वोतम बिन्दु से हटने पर जिन-जिन बिन्दुओं पर परिवहन खर्च में इकाई वृद्धि होती है उनकों मिलाने वाली रेखा को आइसोडापेन कहते है। आइसोडापेन बनाने से पूर्व वेबर ने निम्न कल्पपनाएँ की है :

(i) कच्ची सामग्री और तैयार माल की परिवहन लागत प्रति टन दूरी इकाई कच्चे माल का स्त्रोत तथा बाजार विन्दु एक-एक ही है ।

(ii) बाजार बिन्दु एंव कच्ची सामग्री के स्त्रोत के बिन्दुओं को केन्द्र मानकर समान दूरियों के संकेन्द्रीय वृत खीचें जा सकते है जो समान भार के लिए एक इकाई परिवहन लागत बतलातें है ।

(iii) कच्ची सामग्री अशुद्ध (मिश्रित) है जो उत्पादन प्रक्रिया में अपने कुल वजन का 50% वजन कम कर देती है । वेबर के उक्त कल्पनाओं को निम्न रेखाचित्र से और स्पष्ट किया जा सकता है ।

वेवर के उक्त कल्पानाओं को निम्न रेखाचित्र से और स्पष्ट किया जा सकता है ।

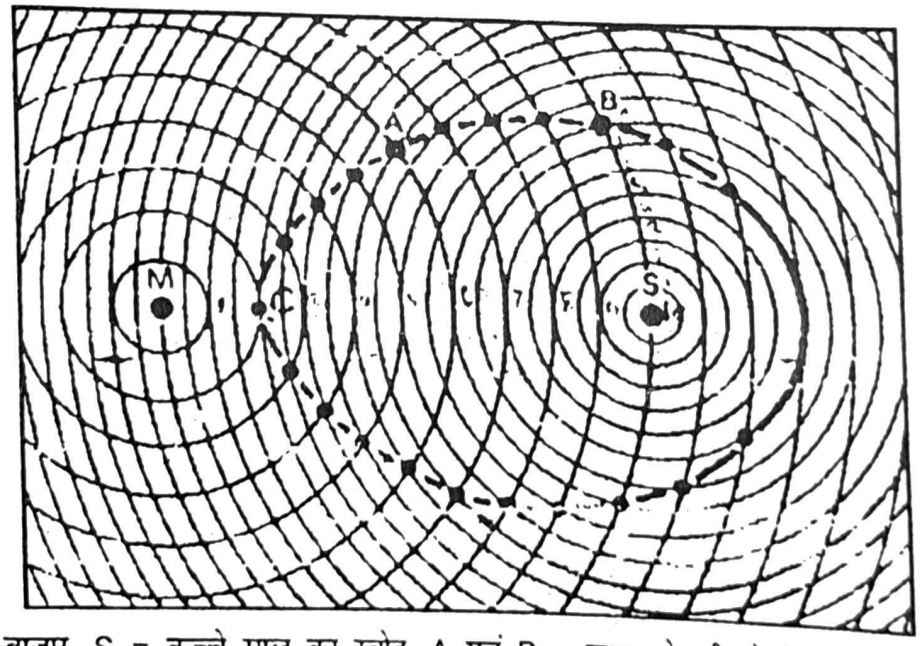

जहाँ M = बाजार, S = कच्चे माल का स्त्रोत, A एवं B = कारखाने की दो विचारणीय स्थितियाँ पतली रेखाओं के वृत्त-दूरी की इकाईयाँ मोटी रेखा = आइसोडापेन, C = क्रांतिक आइसोडापेन

चित्र सं० 12.2 : आइसोडोपेन

चित्र सं० 12.2 को देखने यह स्पष्ट होता है कि S विन्दु पर कच्ची सामग्री उपलब्ध है । उत्पादित वस्तु की खपत 'M' विन्दु पर होती है । यह मान लिया गया है कि प्रति इकाई उत्पादित वस्तु के लिए उसके दूने वजन की कच्ची सामग्री की आवश्यकता होती है । इस स्थिति में उद्योग की स्थापना S विन्दु पर ही अर्थात कच्चे माल के समीप ही होगी । M विन्दु को केन्द्र मानकर खीचें गए संकेन्द्रीय वृत उत्पादित वस्तु के परिवहन खर्च के द्योत

है। जबकि 'S' बिन्दु को केन्द्र मानकर खीचें गए संकेन्द्रीय वृत कच्ची सामग्री का परिवहन का खर्च बताते है। चुँकि कच्ची सामग्री के परिवहन का खर्च, उत्पादित वस्तु के परिवहन खर्च की अपेक्षा दुगुना होगा। यही कारण है कि 'M' बिन्दु से खिचें गए संकेन्द्रीय वृत 'S' बिन्दु से खीचें गए संकेन्द्रीय वृतों से दूने अन्तर पर दिखाए गए है। वेबर के सिद्धान्त के अनुसार इस स्थिति में उद्योग 'S' बिन्दु पर स्थापित होगा। इसके अलावे कही भी उद्योग की स्थापना किए जाने पर अतिरिक्त परिवहन खर्च करना पड़ेगा। अब मान लिजिए कि उद्योग 'S' बिन्दु पर स्थापित न होकर 'B' बिन्दु पर स्थापित होता है। 'S' से 'B' तक कच्ची सामग्री का परिवहन खर्च 8 इकाई है यानि कुल 18 इकाई होता है। जो 'S' बिन्दु पर कारखाना स्थापित होने वाली स्थिति से 8 इकाई अतिरिक्त परिवहन खर्च होगा। वेबर महोदय ने बताया कि क्रांतिक आइसोडापेन (Critical Isodapane) जो कि उपरोक्त चित्र में 'C' से प्रदर्शित किया गया है के किसी भी बिन्दु पर उद्योग की स्थापना करने पर लाभ होता है तथा उसके बाहर उद्योग लगाने से हानि होती है।

12.5 एकत्रीकरण या समूहीकरण का प्रभाव (Effect of Agglomeration)

वेबर ने जिस प्रकार कारखाने की स्थापना में श्रम का प्रभाव एंव परिवहन- लागत को दर्शाया है और बताया कि वे इसकी स्थापना को विचलित करते है। उसी तरह उद्योगों के एकत्रीकरण का प्रभाव भी उद्योगों के स्थानीयकरण पर पड़ता है। उनके अनुसार एकत्रीकरण तीन प्रकार के होते है :

(i) कारखानों के विस्तार से जिसके कारण बड़े पैमाने पर उत्पादक-जन्य लाभ उपलब्ध हो जाते है

(ii) एक ही उद्योग के कई कारखानों के एक स्थान पर स्थापित होने से, जिसके कारण सामान्य तकनीकी सुविधाएँ तथा उत्पादित वस्तु के विक्रय सम्बन्धी सुविधाएँ प्राप्त होती है।

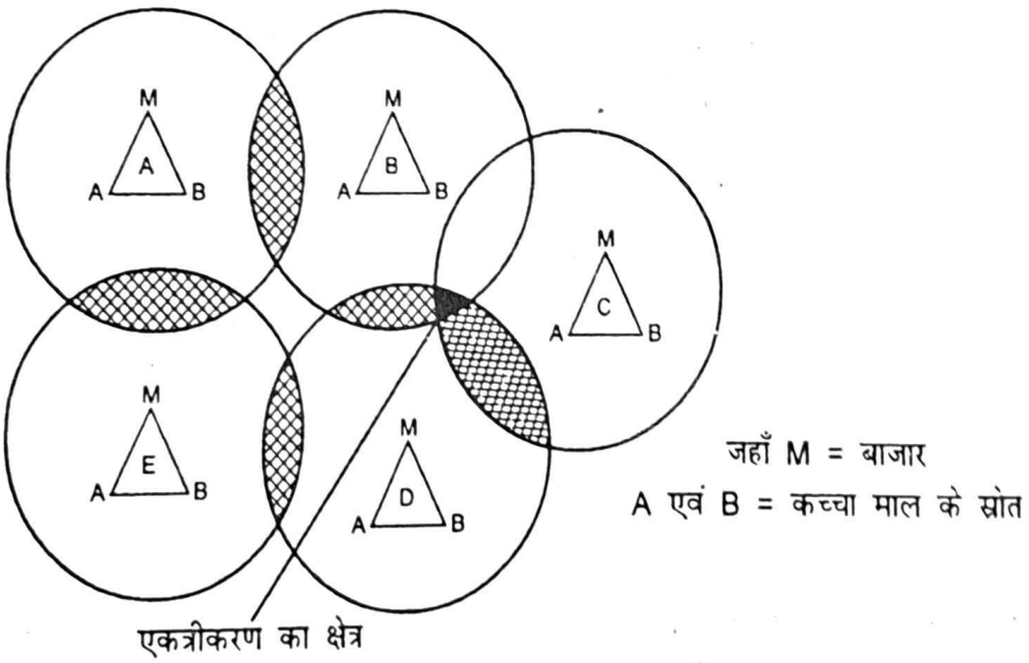

चित्र सं० 12.3 : एकत्रीकरण एवं औद्योगिक स्थानीयकरण

(iii) विभिन्न प्रकार के उद्योगों के एक स्थान पर स्थापित होने से जिसके कारण उद्योगों के लिए सामूहिक सामान्य सुविधाएँ जैसे परिवहन के साधन आदि उपलब्ध होते है।

वेबर के अनुसार थोड़ी देर के लिए मान लिया जाए कि कारखानें के उत्पादन खर्च गें श्रम के प्रादेशिक वितरण जनित अन्तर नहीं पड़ता। यदि हम फिर परिवहन खर्च के आधार पर निर्धारित स्थापन विन्दु से प्रारंभ करें

तो एक ओर परिवहन खर्च के दृष्टिकोण से सर्वोत्तम विन्दु से दूर हटने में जहाँ अतिरिक्त परिवहन खर्च होगी वही दूसरी ओर एकत्रीकरण से उत्पन्न लाभ भी बढ़ सकता है । अत: कारखानें की स्थापना उस सर्वोत्तम बिन्दु से उतनी दूर हटकर हो सकती है जहाँ तक एकत्रीकरण से उत्पन्न लाभ परिवहन खर्च की वृद्धि से अधिक अथवा बराबर हो ।

वेबर के उक्त एकत्रीकरण के प्रभाव को चित्र सं० 12.3 से और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है :

चित्र सं० 12.3 में पांच उद्योग A,B,C,D, और E कार्यरत है तथा ये अपने अलग-अलग स्थानीयकरण त्रिभुजों (Locational Triangles) में स्थित हैं । इनमें से यदि कोई तीन औद्योगिक इकाईयों एक ही स्थान पर स्थापित हो जाए तो एकत्रीकरण क्षेत्र में उत्पादन लागत में कमी की जा सकती है । एक ही उद्योग के कई कारखानें एक जगह संकेन्द्रित होन पर विशिष्ट तकनीकी व सेवाएँ अधिक श्रम विभाजन तथा बड़े पैमाने पर क्रय एवं विक्रय की सुविधाएँ प्राप्त होती है । प्रस्तुत चित्र में 100 रू० प्रति इकाई दूरी व भार के सम्बन्ध में आइसोडापेन खीचे गए है । इस स्थिति में ठएब्ए तथा क तीन कारखानें आइसोडापेन के अन्दर वाले भाग में ही स्थापित हो सकते है और उनका अतिरिक्त परिवहन व्यय प्रतिटन 100 रू० से अधिक नहीं होगा । अन्य दो कारखानें । तथा E इस एकत्रीकरण का लाभ नहीं प्राप्त कर सकते क्योंकि इस स्थिति पर आने के लिए उन्हें संभावित लाभ से अधिक परिवहन पर अतिरिक्त व्यय करना पड़ेगा ।

यदि एकत्रीकरण में निरंतर वृद्धि होती जाए तो उससे उत्पन्न लाभ उसी अनुपात में बढ़ सकता है अथवा एक निश्चित स्थिति प्राप्त होने के बाद स्थिर भी हो सकता है । परन्तु किसी भी हालत में एकत्रीकरण से लाभ तभी होगा । जब एक ही साथ कई उद्योगपति एक स्थान पर कारखाने स्थापित करने का निर्णय करें ।

12.6 वेबर के औद्योगिक स्थानीयकरण सिद्धान्त की आलोचना (Criticism of the Industrial Location Theory of A Weber)

अल्फ्रेड वेबर के स्थानीयकरण सम्बन्धी सभी निष्कर्ष अब सामान्य हो गये है क्योंकि ये ऐसी मान्यताओं पर आधारित है जो वास्तविक जगत में चरितार्थ नहीं होती । इस प्रकार वेबर के सिद्धान्त की आलोचना अनेक आधारों पर की गई है जो निम्न प्रकार है :

(i) वेबर का पूरा विश्लेषण कच्चे माल के स्त्रोत एवं बाजार केन्द्र को निश्चित बिन्दु मानकर हुआ है ।

(ii) वेबर ने सिर्फ परिवहन लागत पर विशेष ध्यान दिया है, उत्पादन प्रक्रिया लागत पर नहीं ।

(iii) वेबर ने बताया कि परिवहन लागत में भार और दूरी के अनुसार वास्तविक वृद्धि होती है, जबकि वास्तविक रूप से यह वृद्धि क्रमश: घटता है ।

(iv) वे न्यूनतम लागत बिन्दु को ही अधिकतम लाभ बिन्दु समझते हैं, जबकि वास्तविक दुनिया में ऐसा देखने को नहीं मिलता ।

(v) वेबर के विश्लेषण पद्धति में भी अनेक विसंगतियों देखने को मिलती है । उदाहरण के लिए श्रम गुणांक अन्तर्गत, श्रम लागत और अन्य प्रकार की लागतों में अन्तर्सम्बन्ध स्थापित होना चाहिए था न कि उसके में । उन्होंने श्रम की असीमित आपूर्ति एवं निश्चित मजदूरी की मान्यता द्वारा श्रमिक प्रवजन और विकासशील क्षेत्रों में श्रम के अभाव की वास्तविकता की अपेक्षा की ।

(vi) वेबर द्वारा प्रस्तुत एकत्रीकरण का प्रभाव वर्तमान औद्योगिक जगत् की दशाओं से मेल नहीं खाता है ।

(vii) वेबर ने राजनीतिक समाजिक तथा मानवीय कारकों की ओर विल्कुल ध्यान नहीं दिया जो आधुनिक अवस्थिति को प्रभावित करते है ।

12.7 निष्कर्ष (Conclusion)

उपरोक्त आलोचनाओं एवं विभिन्न कमियों के बावजूद वेबर का सिद्धान्त उद्योग के स्थानीयकरण के सम्बन्ध में आरंभिक एवं क्रमबद्ध विश्लेषण प्रस्तुत करता है । सिद्धान्त के प्रस्तुतिकरण के समय एवं अब के समय में काफी परिवर्तन हो चुका है । बाद के अनेक विचारकों ने वेबर के सिद्धान्त से प्रेरणा ली है । वाल्टर इजार्ड का मत है कि वेबर के सिद्धान्त की मदद से संयुक्त राज्य अमेरिका (U.S.A.) के लौह इस्पात उद्योग के स्थानीयकरण का सार्थक विश्लेषण किया जा सकता है । अनेक विद्वानों ने वेबर के सिद्धान्त को संशोधित और परिवर्तित भी किया है । स्वीडन के अर्थशास्त्री टार्ड पैलेन्डर (Tord Palender) ने बाजार क्षेत्र का सिद्धान्त देते समय वेबर की आइसोडापेन विधि का प्रयोग सिद्धान्त देते समय वेबर की आइसोडापेन विधि का प्रयोग किया है । उन्होंने एक बिन्दु से समान दूरी वाले स्थानों को जोड़ने वाली रेखा को समपरिवहन व्यस रेखा (Isochrones) समविक्रय मूल्य रेखा (Isotims) जैसी विधियों का उपयोग किया है । यद्यपि बैलेंडर ने वेबर के एकत्रीकरण को अस्वीकार किया है । इस सिद्धान्त की मान्यताओं में वास्तविकता का अधिक से अधिक समावेश करके इसे अधिक सार्थक बनाया जा सकता है ताकि दुनिया के तेजी से बदलते परिवेश में भी इसकी प्रांसगिकता कायम रहे ।